स्थानीय ज्ञान के माध्यम से सीखने को सुदृढ़ करना

अक्षता जे. ए. और सुमंगला

हम अक्सर कहते हैं कि "विद्यार्थी सक्रिय शिक्षार्थी हैं, न कि निष्क्रिय श्रोता।" चूँकि ग्रामीण इलाक़ों के सार्वजनिक स्कूलों में अधिकांश विद्यार्थी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं, इसलिए उनके जुड़ाव को सुनिश्चित करने और सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ करने के लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि शिक्षक विभिन्न शैक्षणिक विधियों को अपनाएँ।

एसोसिएट कार्यक्रम के तहत, हम यादगीर ज़िले के दो स्कूलों – शासकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय, अशनल और शासकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय, कंचागाराहल्ली का दौरा करते रहे हैं। पहली से आठवीं तक की कक्षाओं वाले इन दोनों स्कूलों में क्रमशः 228 और 202 विद्यार्थी हैं। प्रत्येक कक्षा में 30-40 विद्यार्थी होते हैं, जिनमें से अधिकांश प्रथम पीढ़ी के स्कूली विद्यार्थी हैं। बच्चे विशाल ज्ञानकोष और अपने आस-पास की गहरी समझ के साथ स्कूल में आते हैं, लेकिन सीखने की प्रक्रियाएँ आमतौर पर कक्षाओं तक ही सीमित रहती हैं और इन विद्यार्थियों की दैनिक गतिविधियों तक नहीं जाती हैं। इसका प्रभाव सीखने के अपेक्षित परिणामों पर इन दोनों ही दृष्टियों से देखा जाता है कि कितने बच्चे इसे हासिल करते हैं और किस स्तर तक।

पाठ योजनाओं को तैयार करते समय हम इन कारकों को ध्यान में रखते हुए बच्चों की सहभागिता और जुड़ाव को प्राथमिकता देते हैं। इसमें मौखिक अभिव्यक्ति के मौक़े बनाना, व्यापक रूप से पोस्टरों और सचित्र कहानियों को पढ़ना, अभिव्यक्ति के लिए लेखन और गणितीय संक्रियाओं से दैनिक घटनाओं को जोड़ना जैसे पहलू शामिल होते हैं। ये गतिविधियाँ कक्षा के भीतर और बाहर समय और स्थान के बीच सन्तुलन भी बनाए रखती हैं।

शैक्षणिक वर्ष 2023-24 की शुरुआत में, हमने स्कूल के सभी बच्चों के लिए पाँच-दिवसीय बाल सृजनात्मक कार्यशाला आयोजित की, जिसमें स्कूली शिक्षा के प्रति बच्चों के उत्साह और रुचि को बढ़ावा देने के लिए विविध गतिविधियाँ शामिल थीं। कार्यशाला के उद्देश्य थे :

- सृजनात्मक और आलोचनात्मक जुड़ाव की ज़रूरत वाली गतिविधियों में बच्चों को शामिल करके उन्हें स्कूल वापस लाना (इस सन्दर्भ में बताते चलें कि बच्चों को छुट्टियों के बाद स्कूल लौटने में कई हफ़्ते लगते हैं)।
- गतिविधियों में विद्यार्थियों और अभिभावकों को शामिल करके स्कूल के साथ सामुदायिक सम्बन्धों में सुधार लाना।
- बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के पहलुओं को आपस में जोड़ने वाली गतिविधियों का आयोजन करना।
- शिक्षकों को गतिविधियों में भाग लेने और अपने अध्यापन कार्यों में इन्हें शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करना।

विद्यार्थियों और समुदाय की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए स्कूल के समय से पहले समुदाय के बीच आयोजित कुछ गतिविधियों के उदाहरण इस प्रकार हैं – सरल खेल, कला प्रदर्शन (यक्षगान, नाटक, कठपुतली का खेल), पक्षी-देखना, स्थानीय सामग्री का उपयोग करके सरल कला और शिल्प बनाना। इन गतिविधियों में शामिल होने या उसमें योगदान करने के लिए हमने और बच्चों ने उनके माता-पिता और युवाओं को भी आमंत्रित किया था।

हमें महसूस हुआ कि भले ही समुदाय ने तत्काल सहयोग या भागीदारी नहीं की, तब भी वे चौकस थे और अपने तरीक़े से उत्साहवर्धन कर रहे थे। हालाँकि हमने इस कार्यशाला से पहले बच्चों के साथ समुदाय का भ्रमण किया था, फिर भी ये पाँच दिन हमारे लिए बिल्कुल अलग समझ और सम्बन्ध बनाने में मददगार साबित हुए। इन भ्रमणों के दौरान हमें विभिन्न समुदायों के घरों, पूजा स्थलों, मनोरंजन और जमावड़ों के स्थानों आदि के वातावरण को समझने में मदद मिली।

हर सुबह गतिविधियों का आयोजन करने के लिए हम वहाँ मौजूद रहते थे तो उस दौरान, हमें कुछ सामाजिक जटिलताओं के बारे में भी पता चला, जैसे कि बच्चों का गाँव के कुछ हिस्सों में जाने से इनकार करना और जो गए, उन्हें गाँव के लोगों के साथ टकराव झेलना पड़ा। ऐसे क्षणों में विशेष संवेदनशीलता की आवश्यकता थी और इन्हें केवल माता-पिता और शिक्षकों के सहयोग से ही सम्हाला जा सकता था। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि इस अनुभव से हमें यह एहसास हुआ कि बच्चे अपने आस-पास का कितना अवलोकन करते हैं, उससे कितना सीखते और जुड़ते हैं; वे अपनी ज्ञान प्रणालियों से

कितनी अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं; और स्कूल में उनके सीखने का यह कितना कम हिस्सा है।

इस अन्तर को पाटने के लिए, हमने गाँव में लोगों के सरल साक्षात्कार लेने और गाँव का एक नक़्शा व अख़बार बनाने में बच्चों की मदद की। बच्चों द्वारा बनाई या विकसित की गई हर चीज़ को आख़िरी दिन एक प्रदर्शनी के रूप में प्रदर्शित किया गया, जिसकी मेज़बानी बच्चों ने ख़ुद की थी।

गाँव का अख़बार

शुरुआत में, हमने यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया कि विद्यार्थी अख़बार की उपयोगिता और इसकी विविध सामग्री को समझें। हमने उन्हें सोचने के लिए प्रेरित किया कि उनके गाँव का अख़बार कैसे बनाया जा सकता है। तब, विद्यार्थियों द्वारा अख़बारों में शामिल की जाने वाली सामग्री (समाचार और अन्य चीज़ों की सूची) को सूचीबद्ध किया गया। एकत्रित समाचारों की सूची विविध और दिलचस्प थी। सूचीबद्ध प्रत्येक समाचार के लिए, विद्यार्थियों के पास हमें बताने के लिए इतनी अधिक बातें थीं कि हमने उन्हें विभिन्न समाचार सौंपते हुए उनके बारे छोटे लेख तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया।

चित्र-1 : *समुदाय के लोगों को अपना काम समझाते हुए विद्यार्थी।*

गाँव के अख़बारों को निकाला गया है। विद्यार्थियों द्वारा तैयार किए गए इन अख़बारों में उनके स्कूल और गाँव के आस-पास हुई घटनाओं के बारे में जानकारी शामिल है। छटवीं और सातवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने दोनों स्कूलों में इस गतिविधि को अंजाम दिया। प्रत्येक संस्करण में विद्यार्थियों की कला, उद्धरण, तस्वीरें और पहेलियाँ भी शामिल हैं।

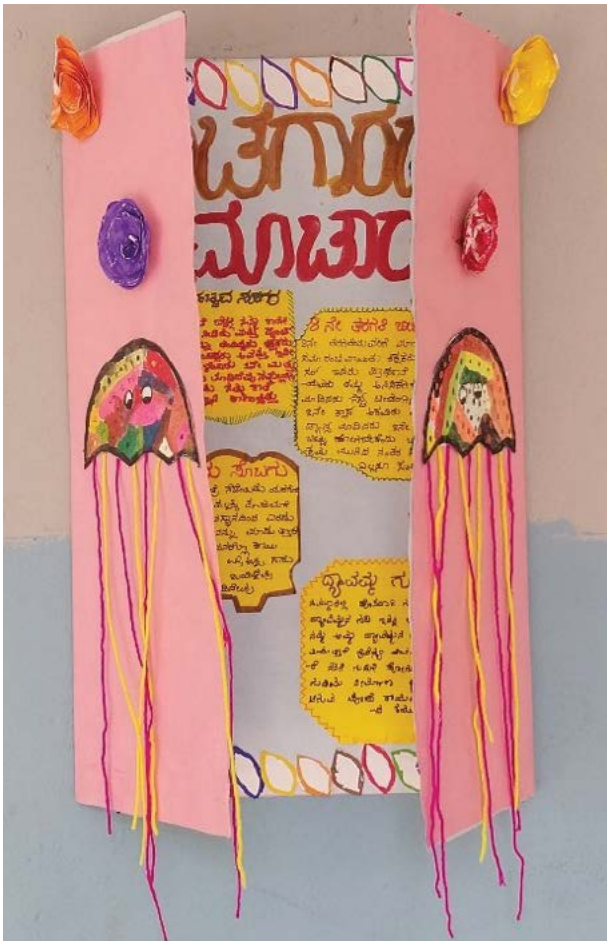

चित्र-2 : *जीएचपीएस कंचागाराहल्ली के विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया गाँव का अख़बार।*

साक्षरता और संख्यात्मक कौशल बढ़ाना

अख़बार निकालने से साक्षरता के कई पहलुओं को सुदृढ़ करने में मदद मिली, जैसे गहराई से सोचने की प्रक्रिया, जानकारी को सूचीबद्ध करने, उसकी प्राथमिकता निर्धारित करने और छाँटने के कौशलों का विकास, डेटा एकत्रित करना और उसे समेकित करना, अपने अनुभवों के बारे में लिखना, घटनाओं की शृंखला का वर्णन करना, प्रश्नों को बनाने के लिए पढ़ना और लिखना, कला और शिल्प जैसे कई तरीक़ों से जानकारी प्रस्तुत करना और इसे विभिन्न लोगों को समझाना।

आमतौर पर, विद्यार्थियों को दी जाने वाली सामग्री सीमित

होती है और उनसे औपचारिक कन्नड़ा में पढ़ने और लिखने की अपेक्षा की जाती है। इसलिए, जब उन्हें स्थानीय संसाधनों से गाँव और स्कूल आदि में होने वाली घटनाओं की विषयवस्तु तक पहुँचने और स्थानीय बोली में लिखने का मौक़ा दिया गया, तो इसने उनके लिए स्वतंत्र लेखन का मंच तैयार कर दिया। इसने उन्हें 'स्कूल में नए शिक्षकों की नियुक्ति', 'बारिश के कारण छुट्टी की घोषणा' जैसी ख़बरों को प्राथमिकता देने का मौक़ा दिया। ये ख़बरें उनके लिए रुचिकर थीं और इसलिए उनके लेख अधिक विस्तृत और जानकारीपूर्ण थे। इसी तरह, एक विद्यार्थी ने स्थानीय भोजन (हुण्डी) बनाने की विधि के बारे में लिखा और यह भी बताया कि इसे केवल एक त्योहार के दौरान साल में एक ही बार क्यों बनाया जाता है।

डेटा संग्रह करने की विभिन्न विधियों का विकास

हमने कुछ उदाहरण देखे जहाँ विद्यार्थियों ने डेटा एकत्रित करने का अनूठा तरीक़ा विकसित किया। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी ने 'गाँव में चल रहे मन्दिर निर्माण' की ख़बर चुनी थी, जिसके लिए उस विद्यार्थी ने विश्वसनीय स्रोतों (बुजुर्गों, शिक्षकों और मन्दिर ट्रस्ट के सदस्यों) से सहायता ली ताकि निर्माण में प्रयुक्त पत्थर का प्रकार, धन का स्रोत, अब तक का ख़र्च आदि प्रामाणिक विवरण एकत्रित किया जा सके। एक अन्य मामले में, एक विद्यार्थी को मंत्रीमण्डल गठन की ख़बर देते हुए देखा गया, जिसमें उसने इस प्रक्रिया के दौरान हुई तमाम घटनाओं को जोड़ा था। विद्यार्थी ने शिक्षक द्वारा बताई गई कैबिनेट गठन की पूरी प्रक्रिया जिसमें नामांकन, प्रचार, वोट डालना, परिणाम की घोषणा से लेकर शपथ ग्रहण समारोह तक शामिल था, को बढ़िया ढंग से लिखा जो विद्यार्थी के स्वतंत्र लेखन कौशल में सुधार को इंगित करता है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात, हमने समकालीन समस्याओं जैसे बारिश के दौरान सड़कों पर गड्ढों से होने वाली तबाही और कक्षाओं में छत से पानी का रिसाव आदि पर विद्यार्थियों के आलोचनात्मक नज़रिए को देखा।

निष्कर्षों को विभिन्न तरीक़ों से प्रस्तुत करना

लेखों के अलावा, अख़बार ने विद्यार्थियों को कलाकृतियों, चित्र पहेलियों, उद्धरणों, शब्द पहेलियों और खाने की विधियों जैसे विभिन्न रूपों में सामग्री प्रस्तुत करने के अवसर भी प्रदान किए। इससे सीखने के विभिन्न स्तरों वाले विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित हुई। उदाहरण के लिए, एक लड़की को लिखने में कठिनाई होती थी लेकिन उसने एक चित्र के माध्यम से जल संरक्षण पर अपने विचार, अच्छी तरह से व्यक्त किए।

गाँव के अख़बार के दो संस्करणों की तुलना करने पर हम सुधार देख सकते थे। उदाहरण के लिए एकत्रित ख़बरों की संख्या में वृद्धि हुई और दूसरे संस्करण में लेख अधिक वर्णनात्मक थे। पहले संस्करण में वाक्य अच्छी तरह से निर्मित नहीं थे, जबकि

चित्र-3 : *जीएचपीएस अशनल के विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया गाँव का नक़्शा।*

दूसरे में व्याख्यात्मक और अभिव्यंजक तरीक़े से घटनाओं का विवरण देने के साथ ही वाक्य संरचना के अनुक्रमण और सुसंगति पर स्पष्ट ध्यान दिया गया था।

गाँव का नक़्शा

आमतौर पर, पर्यावरण विज्ञान की कक्षाओं में जब नक़्शे दिखाए जाते हैं, तो उसमें किसी विशेष देश या राज्य की रूपरेखाएँ बनी रहती हैं। इनमें स्थानों का पहचानने की प्रक्रिया यांत्रिक होती है जहाँ विद्यार्थियों को प्रमुख शहरों और स्थलों को याद करके चिह्नित करना होता है। गाँव का नक़्शा बनाना, इस प्रक्रिया को उनके लिए अधिक प्रासंगिक बनाने और भौगोलिक प्रतिनिधित्व तथा दिशाओं और संकेतों के उपयोग जैसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करने का एक तरीक़ा था।

जो वे देखते हैं उसे प्रस्तुत करना

शुरू करने के लिए, उनके स्कूल का एक नक़्शा बनाया गया जिसमें विद्यार्थियों ने झण्डे के खम्भे, मंच, वॉलीबॉल कोर्ट, पीने के पानी के नल आदि चिह्नों को पहचान लिया और इन्हें सटीक ढंग से सही स्थानों पर चित्रित किया। विद्यार्थियों ने इसे स्कूल के बाहर तक बढ़ाते हुए, जल निकायों, पूजा स्थलों (चर्च, मस्जिद, मन्दिर), बैंक, दुकानें और आँगनवाड़ी केन्द्र जैसे चिह्नों की पहचान की जिन्हें वे स्कूल से घर जाते हुए देखते हैं। जब उनसे कहा गया कि वे उड़ते हुए पक्षी के रूप में ख़ुद की कल्पना करते हुए नीचे अपने गाँव की ओर देखें, तो उन्होंने गाँव के हवाई दृश्य की कल्पना की और अन्तिम नक़्शे को तैयार किया।

इस गतिविधि ने किसी भौगोलिक क्षेत्र की कल्पना करना, दिशा और संकेतों का ज्ञान, स्थल सीमाओं से दूरियों के मानसिक नक़्शे बनाना और स्थानों को चिह्नित करना, साथ ही पूरे गाँव को एक चार्ट में फिट करना आदि सीखने के कौशलों को सुदृढ़ किया। अनुमान लगाना, जो गणित शिक्षण का एक प्रमुख लक्ष्य भी है, वह भी यहाँ पर पूरा हुआ। कुल मिलाकर, हमारे न्यूनतम सहयोग से विद्यार्थियों द्वारा गाँव का चित्रात्मक निरूपण सफ़ाई से किया गया।

प्रस्तुतीकरण के सौन्दर्यपूर्ण पहलू

एक अनोखी चीज़ जो हमने पाई वह थी विद्यार्थियों द्वारा इमारतों व अन्य संरचनाओं को दर्शाने के लिए चुने गए रंग और दुकानों, पूजा स्थलों व खेतों के लिए उनके द्वारा उपयोग किए गए विशेष चिह्न। आमतौर पर, लोग नक़्शे को देखकर स्थानों की कल्पना करते हैं, लेकिन यहाँ विद्यार्थियों ने कल्पना करके नक़्शा बनाया, इस प्रकार उनकी सीखने की प्रक्रिया प्रेरक बन गई।

जब हमने कार्यशाला के दौरान विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाने की योजना बनाई, तो हर घर से लोगों को आमंत्रित करके विद्यार्थियों ने समुदाय को जुटाने में अग्रणी भूमिका निभाई। दोनों स्कूलों में समुदाय से लगभग सौ लोगों ने प्रदर्शनी में भाग लिया। कंचागाराहल्ली के शासकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय (GHPS) में समुदाय के लोगों के साथ-साथ शिक्षा विभाग के अधिकारियों का सहयोग उल्लेखनीय था। जबकि, अशनल के शासकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय (GHPS) में जहाँ प्रदर्शनी समुदाय के भीतर हुई, वहाँ ग्रामीणों की भागीदारी अधिक

चित्र-4 : *गाँव के नक़्शे पर स्थानों को खोजते आगन्तुक।*

देखी गई। विद्यार्थियों को गाँव के अख़बार और नक़्शे के बारे में अलग-अलग दर्शकों को बताते हुए देखा गया, जैसे शिक्षा विभाग के ओहदेदार, कॉलेज के विद्यार्थी, माता-पिता और गाँव के बुज़ुर्ग। वे इस बात का भी ध्यान रख रहे थे कि कौन पढ़ सकता है और कौन नहीं। हमने देखा कि विद्यार्थी अपनी बात समझाते समय स्थानों का चुनाव सूझ-बूझकर कर रहे थे, जैसे वहाँ आए ग्रामीणों के घरों या सड़कों की ओर इशारा करना। साथ ही वे उन्हें अपने द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया के बारे में बता रहे थे और क़िस्से भी सुना रहे थे। एक दिलचस्प बात यह थी कि समुदाय और शिक्षा विभाग के अधिकारी, गाँव के अख़बार के दूसरे अंक पर काम करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित कर रहे थे।

हम समझते हैं कि शिक्षण के किसी भी तरीक़े से सीखने में बदलाव हो सकता है, जैसा कि हम अक्सर उन स्कूलों के शिक्षकों के साथ देखते हैं जहाँ हम अपना काम करते हैं। वहाँ यह माना जाता है कि बच्चे रटकर सीखते हैं और इसे सीखने को सुदृढ़ करने के एकमात्र तरीक़े के रूप में उपयोग किया जाता है। कक्षा के भीतर की जाने वाली गतिविधियाँ ज़्यादातर अवधारणा परिचय के लिए होती हैं, लेकिन गतिविधि-आधारित सीखना विरले ही होता है और सुदृढ़ीकरण के विविध तरीक़ों को कतई नहीं देखा जाता है। यह स्थिति इस विश्वास से उपजती है कि अन्तिम उत्पाद जहाँ बच्चे उत्तर लिखते हैं या गणित के सवाल हल करते हैं, वही एकमात्र स्थान है जहाँ सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता होती है।

इस पहल के साथ, हमने सीखने के प्रत्येक पहलू पर काम करने के महत्त्व को देखा है जो समग्र सुधार लाएगा। उदाहरण के लिए, भाषा सीखने में सुधार तब होता है जब हम साथ-साथ अच्छे प्रश्न पूछने, रचनात्मक कार्य देने, संकेतों के साथ विद्यार्थियों के लेखन को सहयोग करने, उन्हें उनके लेखन की योजना बनाने और उसमें संशोधन करने में मदद करने और अन्त में, उनके काम को प्रस्तुत करने पर काम करते हैं। अगर हमने विद्यार्थियों को सिर्फ़ उनके गाँव के त्योहार पर लिखने का होमवर्क दिया होता, तो लेख काफ़ी अलग होते और इस प्रक्रिया में शामिल होने वाले विद्यार्थियों की संख्या सीमित होती। हमने यहाँ जो तरीक़ा अपनाया है, उसका लाभ यह है कि इसमें कई तरह के अवसरों और अनुभवों की गुंजाइश होती है और व्यापक भागीदारी, गतिविधियों में बेहतर जुड़ाव और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में समुदाय की भागीदारी सुदृढ़ होती है। इस पूरी प्रक्रिया को पीछे मुड़कर देखने से हमें यह समझ मिलती है कि जब विभिन्न शिक्षण विधियों के माध्यम से एक उपयुक्त मंच बनाया जाता है, तो यह सीखने में बदलाव को कम समय में अधिक प्रभावी ढंग से सामने लाता है।

चित्र-5 : *जीएचपीएस कंचागाराहल्ली में शिक्षा विभाग के अधिकारियों को गाँव का नक़्शा दिखाते हुए विद्यार्थी।*

टिप्पणी :

इस कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सहयोगी किसी सरकारी स्कूल में एक साल बिताते हैं और कक्षाओं का अवलोकन करते हुए उनके साथ जुड़ना सीखते हैं। वे स्कूल की प्रक्रियाओं को समझने की कोशिश करते हैं और बच्चों के सीखने में योगदान देते हैं। साथ ही स्कूल के वातावरण में अपना योगदान देते हैं ताकि सार्वजनिक स्कूलों और सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली की एक समग्र समझ विकसित कर सकें।

अक्षता जे. ए. कर्नाटक के यादगीर स्थित अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन ज़िला संस्थान में सहयोगी सन्दर्भ व्यक्ति हैं। उन्होंने बायोटेक्नोलॉजी में स्नातकोत्तर किया है। उन्हें नृत्य और गायन बहुत पसन्द है और वे पिछले छह साल से यक्षगान का अभ्यास कर रही हैं। उनसे *akshatha.ja@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

सुमंगला कर्नाटक के यादगीर स्थित अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन ज़िला संस्थान में सहयोगी सन्दर्भ व्यक्ति हैं। उन्होंने जीवविज्ञान में स्नातकोत्तर किया है। उन्हें पढ़ने, ट्रेकिंग करने, नई जगहों और संस्कृतियों की खोज करने में बहुत मज़ा आता है। उनसे *sumangala.b@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : विजय सेन **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

संगीत में इतनी ताक़त होती है कि वह हमारी भावनाओं को जगा दे। अक्सर हम बच्चों को गानों, कविताओं को गाते या गुनगुनाते हुए और कभी-कभी सिर्फ़ किन्हीं जानी-पहचानी धुनों को गुनगुनाते हुए सुनते हैं। यहाँ सिरोही में एक तो बच्चों का अँग्रेज़ी भाषा से बहुत वास्ता नहीं पड़ता, दूसरे, यह उनकी तीसरी भाषा है। विद्यार्थियों को अक्सर इस भाषा के कुछ शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को समझने और स्पष्ट रूप से बोलने में भी दिक़्क़त होती है। अतः, उनके सीखने को सुदृढ़ बनाने के लिए उनके साथ हर दिन कविताओं पर काम ज़रूरी हो जाता है। संगीत में लय-ताल होती है जिससे विद्यार्थियों को भाषा में प्रवाह विकसित करने में मदद मिलती है और जब कविताएँ भाव-भंगिमाओं के साथ गाई जाती हैं, तो बच्चे अँग्रेज़ी भाषा के शब्दों के अर्थ और भावों को भी समझ पाते हैं।

–दीपिका झाला, संगीत : अँग्रेज़ी भाषा सीखने में एक सम्बल, पेज 54